कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 09, (फरवरी, 2024)
पृष्ठ संख्या 52–54

जलवायु परिवर्तन के खतरे को बहुत गंभीरता से लेने की जरुरत

डॉ0 रीना[1] एवं उमेश कुमार[2]
[1]प्राविधिक सहायक
भूमि संरक्षण अधिकारी, कृषि विभाग, आजमगढ़ (उ.प्र.)
[2]वि.व.वि. (कृषिवानिकी), के. वी. के. लेदौरा, आजमगढ़(उ.प्र.)भारत।
Email Id: umeshkunar0295@gmail.com

भूमिका

जिस प्रकार पृथ्वी का जलवायु परिवर्तन तेजी के साथ हो रहा है। अगर ऐसे में ना रोका गया तो पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व समाप्त हो जायेगा। क्योंकि जब मौसम का संतुलन अगर बिगड़ गया तो कहीं पर अधिक गर्मी तो कहीं पर अधिक ठंण्ड, तो कहीं पर अधिक वर्षा जैसी स्थिति उत्पन्न हो जायेगी।ऐसे में मानव का जीवन जीना दुर्बल हो सकता है। इसलिए हमें जलवायु परिवर्तन को रोकना होगा। तभी जाकर हमारा जीवन का अस्तित्व इस पृथ्वी पर बच पाएगा।

जलवायु परिवर्तन क्या है

एक बड़े भू–क्षेत्र में लम्बे समय तक रहने वाले मौसम के औसत स्थिति को हम लोग जलवायु परिवर्तन कहते है आसान शब्दों में समझे तो जलवायु परिवर्तन का मतलब होता है कि किसी क्षेत्र में अगर लगातार ठंड या गर्मी पड़ रही है और वहां पर मौसम में किसी प्रकार का बदलाव नहीं हो पा रही है तो उसे हम लोग जलवायु परिवर्तन कहते हैं। ऐसी स्थिति में मानव का जीवन खतरे में पड़ सकता है अगर इसी प्रकार लगातार जलवायु परिवर्तन होता रहा तो पृथ्वी पर उपस्थित ग्लेशियर जो बर्फ के रूप में है वह जल में बदल जायेगें और अगर ऐसा होता है तो पूरे दुनिया में सुनामी जैसी खतरनाक समुद्री तूफान आ सकता है। जिसके बाद इस पृथ्वी पर जीवन का नामोनिशान नहीं रहेगा। 19वीं सदी की तुलना में आज धरती का तापमान लगभग 1.2 सेल्सियस अधिक बढ़ चुका है इसके पीछे की वजह वायुमण्डल में कार्बन डाई आक्साइड ($ब_2$) गैस की मात्रा की वृद्धि का होना है।

जलवायु परिवर्तन के कारण–

वर्तमान में जलवायु परिवर्तन की जो समस्या हमारे सामने आयी है उनका कोई एक निश्चित कारण नहीं है कारण अनेक है जिनके कुछ तो प्राकृति से जुड़े हैं, तो कुछ के लिए स्वार्थी मानव समाज उत्तरदायी है। वस्तुतः प्राकृतिक कारणों से कहीं ज्यादा मानव जनित कारणों से जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक संकट हमारे सामने आया है। पहले हम जलवायु परिवर्तन से जुड़े प्राकृतिक कारणों पर दृष्टि डालते है–

प्राकृतिक कारणों में मुख्य रूप से ज्वालामुखी महाद्वीवपीय पृथ्थकरण तथा महासागररीय धाराएँ आदि जलवायु परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है।

ज्वालामुखी

भूपर्पट्टी पर वे दरारे ज्वालामुखी कहलाता है जिनमें अन्दर की द्रवित चट्टान लावा, भस्म तथा गैसे निकलती है जब ज्वालामुखी फटते है तब अनेक प्रकार की गैसे बाहर आती है जिनमें मुख्य रूप से सल्फर डाई आक्साइड (SO_2) सल्फर ट्राई आक्साइड (SO_3) क्लोरीन (Cl_2) भाप (H_2O), कार्बन डाई आक्साइड (CO_2) हाइड्रोजन सल्फाइड (H_2S) तथा कार्बन मोनो आक्साइड (CO) आदि शामिल होती है। ये गैंसे धूलकण तथा राख आदि वायुमण्डल में फैलकर जलवायु को प्रभावित करती है ज्वालामुखी तो शांत हो जाती है। परन्तु ये लम्बे समय तक सक्रिय रहकर जलवायु को

प्रभावित करती है। विस्फोट के कारण धूल और राख के कण बहुत ऊपर तक जाते है और वर्षों तक वायु मण्डल में विद्यमान रहकर जलवायु को प्रभावित करते हैं।

महासागरीय धाराएं

पृथ्वी की सतह पर लवण जल का विशाल फैलाव महासागर कहलाता है पृथ्वी का 70 प्रतिशत से भी कुछ अधिक हिस्सा जलाच्छदित है अर्थात सागरों और महासागरों के रूप में है। यह कारण है कि जलवायु के निर्धारण में इनका महत्वपूर्ण योगदान है। समय–समय पर समुद्र अपना ताप वायुमण्डल में छोड़ता रहता है, जिससे

जलवायु प्रभावित होती है। काफी ताप जलवायु के रूप में धरती पर ग्रीन हाउस गैस के प्रभाव को बढ़ाता है। इस प्रकार महासागरीय धाराएं भी जलवायु को प्रभावित करने में योगदान देती है।

प्राकृतिक कारणों से कही ज्यादा मानवजनित कारण जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार है, जिन पर हमने बहुत देर में ध्यान देना शुरू किया।

मानवजनित कारण से जलवायु परिवर्तन

ग्रीन हाउस प्रभाव– ग्रीन हाउस गैस के प्रभाव के कारण जलवायु में बदलाव देखने को मिल रहे हैं कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा में उतार–चढ़ाव प्राकृतिक कारणों से भी होता है और मानवजनित कारणों से भी। औद्योगिक क्रान्ति के बाद उद्योग धंधे तेजी से कायम हुए तथा शहरीकरण की प्रक्रिया में तेजी आये। इस कारण कार्बन डाई आक्साइड (CO_2) की मात्रा वातावरण में बढ़नी शुरू हुई। दूसरी तरफ वनों की अंधाधुन कटाई और दोहन के कारण पेड़–पौधों द्वारा कार्बन डाई आक्साइड को (CO_2) आक्सीजन में परिवर्तन करने की प्रक्रिया भी मन्द पड़ी स्थिति दिन व दिन बत्तर होती चली गयी।

कार्बन डाई आक्साइड ही नहीं, ऐसी अनेक घातक गैसे प्रचुर मात्रा में वायुमण्डल में पहुँचने लगी। इनमें मेथेन, नाइट्रोजन आक्साइड, क्लोरोफ्लोरो कार्बन आदि शामिल है। ये सब मिलकर कार्बन डाई आक्साइड के ग्रीन हाउस प्रभाव को बढ़ाकर जलवायु परिवर्तन से जुड़ी नई–नई चुनौतियां पेश कर रही है।

कृषि

जलवायु परिवर्तन में कृषि से जुड़ क्रिया कलापों ने भी योगदान दिया है। आज हम परामपरागत खेत के बजाय आधुनिक खेती की तरफ उन्मुख है। रासयनिक उर्वरकों का अंधाधुन उपयोग कृषि में बढ़ा है। जलमग्न धान की जुताई से मीथेन का उत्सर्जन होता है। जुगाली करने वाले पशु भी वातारण में मीथेन का उर्त्सजन करते है इससे ग्रीन हाउस प्रभाव बढ़ता है।

जीवाश्म ईंधन–

जीवाश्म आधरित ईंधन के दोहन से कार्बन डाई आक्साइड एवं नाइट्रोजन डाई आक्साइड जैसी गैसों का उत्सर्जन बढ़ा है इस मानव जनित उत्सर्जन से भी जलवायु परिवर्तन की सामान्य बिकराल हुयी है। जीवाश्म आधारित ईंधन के दहन से जहॉ ग्रीन हाउस गैसों का संचयन बढ़ा है वही वायु एवं जल प्रदूषण भी बढ़ा है। अम्लीकरण भी इसी का नतीजा है। कार्बन डाई आक्साइड का उत्सर्जन जहॉ कोयले के दहन के कारण होता है वही इस समय तेल का दहन वायु में 30 प्रतिशत तक कार्बन डाई आक्साइड का उत्सर्जन करता है।

शहरी करण एवं औद्योगिकरण

हमनें शहरीकरण एवं औद्योगिकीकरण के नाम पर अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रकृति का अंधाधुन दोहन किया। एक तरफ तो पेड़ों की अंधाधुन कटाई की तो दूसरी तरफ शहरीकरण

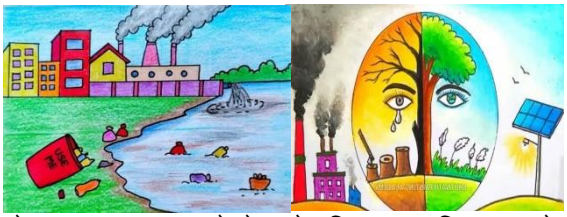

के नाम पर वन क्षेत्रों को निगला। विकास के नाम पर विनाश किया। इको फ्रेंडली होकर कभी

विकास की तरफ ध्यान न देकर पर्यावरण से हद दर्जे की छेड़छाड़ की। प्रदूषण को बढ़ाकर जलवायु परिवर्तन की समस्या को और विकृत बनाने में योगदान किया। इसमें विकसित देश कुछ ज्यादा ही आगे रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव–

1. **वनों पर प्रभाव–** पेड़–पौधों वायुमण्डल में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा को अवशोषित कर आक्सीजन का अधिक मात्रा में उत्पादन करते हैं। जिसके कारण हमारे वायुमण्डल में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा नियन्त्रित होती है लेकिन जिस प्रकार वनों की लगातार कटाई हो रही है। उसके कारण वायुमण्डल में आक्सीजन की कमी हो रही है इसलिए जलवायु परिवर्तन का एक बड़ा कारण पेड़ों की कटाई है।

2. **ध्रुवीय क्षेत्रों पर प्रभाव–** हमारे ग्रह के उत्तरीय एवं दक्षिणीय ध्रुव इसके जलवायु को संचालित करने के लिए आवश्यक है। लेकिन जिस प्रकार जलवायु परिवर्तित हो रहा है। ऐसे में आने–वाले दिनों में यहॉ पर जीवन का अस्तित्व

समाप्त हो जाएगा और जो भी जीव–जन्तु की प्रजातियां यहां पर निवास करती है वह पूरी तरह विलुप्त हो जायेगी।

3. **जल पर पड़ने वाले प्रभाव–** जलवायु परिवर्तन ने जलवायु प्रणाली को पूरी तरह से प्रभावित किया है। इसी कारण लगातार बाढ़ और समुद्री तूफानी जैसे चीजें आ रहे है। जिससे कई लाख लोगों का जीवन बर्बाद हो जा रहा है और लोगों की मृत्यु भी हो रही है। इसलिए जलवायु परिवर्तन को अगर ना रोका गया तो ऐसे लगातार बाढ़ और समुद्री तूफान आते रहेगें और लोगों की मौत होती रहेगी।

4. **वन्य जीवन पर प्रभाव–** जलवायु परिवर्तन के कारण बाघ, अफ्रीकी हाथियों, एशियाई गैंडों, एडली पेगुइन और ध्रुवीय भालू सहित विभिन्न जंगली जानवरों की संख्या में गिरवाट दर्ज की गई है।

जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम–

जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम यहां बिन्दुवार प्रस्तुत है–

- ❖ तापमान बढ़ने से ध्रुवों की बर्फ पिघलने लगती है जिससे सागरों का जल स्तर बढ़ने से तटवर्ती क्षेत्रों में जलमग्न होने का खतरा बढ़ जाता है।
- ❖ असामयिक सूखा और वर्षा की सम्भावना बढ़ जाती है। ग्रीन हाउस गैंसों के प्रभाव के कारण ओजोन की सतह को क्षति पहुॅच रही है। सूर्य से आने वाली पराबैगनी किरणों का अवशोषण कम होने से अनेक प्रकार की बीमारियां बढ़ी है। जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती है, जिससे उबरने के लिए समग्र संतुलित एवं सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता है। धरती को बचाने के लिए वैविश्क पहल की आवश्यकता है। सभी देशों को साथ मिलकर चलना होगा, फिर चाहे वे विकसित देश हो या विकाशील।

जलवायु परिवर्तन को रोकने के उपाय–

1. प्रदूषण से सम्बन्धित सरकारी कानूनों को उच्च स्तर पर लागू करना चाहिए। इन कानूनों के सहारे हम पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त कर के जलवायु परिवर्तन को नियन्त्रित कर सकते है।
2. सभी फ्रिज–फ्रिजर और एयर कंडिशनिंग यूनिट में केमिकल रफ्रिजरेंट्रस होता है। जो की पर्यावरण के लिए खतरनाक होती है। अतः इसके विकल्प की तलाश करनी चाहिए।
3. बांस दुनियाभर में सबसे तेजी से बढ़ने वाला पौधा है जो कि पर्यावरण के लिए बेहद लाभकारी साबित होता है। बांस के पेड़ को अधिक से अधिक लगाना चाहिए।